बी० ए० -भाग-2
प्रधान-हिन्दी
(मुंशी प्रेमचंद)

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज
डुमरॉव बक्सर

गबन के आधार पर प्रेमचंद की उपन्यास कला पर प्रकाश डालें।

उपन्यास- सम्राट प्रेमचंद की औपन्यासिक यथार्थ के धरातल से शुरु होकर आदर्शोन्मुखी हो जाती है। अपने उपन्यास में प्रेमचंद सम्पूर्ण वातावरण के परिप्रेक्ष्य में पात्रों का चरित्र-विश्लेषण करते हैं। आज का जीवन विविधतापूर्ण हो गया है। इस पर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि प्रभाव पड़ा है। फिर जीवन की एक रसता तक ही रचनाकार सीमित नहीं रह सकता है। इस दृष्टि से हम स्पष्ट करना चाहेंगे कि 'गबन' उपन्यास में प्रयाग और कलकत्ता से जुड़े कथानक दो भले दिखें लेकिन उनकी आत्मा एक ही है।

'गबन' का बाह्य रूप से कथानक जैसा लगता है। प्रथम का वातावरण प्रयाग है। जालपा का बचपन, उसकी शादी, आभूषण के साथ जुड़ी घटनाएँ, रमानाथ का पारिवारिक जीवन, जालपा और रमानाथ का पारस्परिक सम्बन्ध, रमानाथ की नौकरी रतन के साथ जालपा का सम्पर्क, उधार आभूषण लाने की घटना, गबन की ये पूर्वार्द्ध घटनाएँ हैं। इसके बाद रेलगाड़ी से कलकत्ता-यात्रा, रमानाथ और देवीदीन का परिचय, पुलिस और रमानाथ की घटना, जोहरा और रमानाथ की घटना तथा जालपा और रमानाथ का सम्पर्क आदि घटनाएँ उत्तरार्द्ध की है।

इन दोनों कथनों के सम्बन्ध में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का कहना है कि ऐसा करने

से गबन में एकात्मकता की रक्षा नहीं हो पायी है। उनके शब्दों में इस उपन्यास के दो उपन्यास बन सकते थे - एक मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन के चित्रण के आधार पर और दूसरा पुलिस के हथकण्डों तथा न्याय की विडम्बनाओं के आधार पर। परन्तु इन दोनों को एक मिलाकर प्रेमचंद जी ने दोनों के प्रभाव को घटा दिया है। साथ ही उपन्यास के संकलन तथा प्रभाव की एकाग्रता में त्रुटि भी अवश्य आ गयी है। डॉ. शचीरानी गुर्टू का कहना है कि 'गबन' का कथानक सामान्य होते हुए भी मनोरंजक है, किन्तु वस्तु - विन्यास की त्रुटियों का भी इसमें अभाव नहीं है।"

लेकिन यह मानना कि दोनों कथानकों में जुड़ाव का अभाव है - उचित नहीं है। अगर सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाए तो सारी भ्रांतियाँ दूर हो जायेंगी। प्रेमचंद सधे हुए उपन्यासकार थे। उन्होंने जीवन को बहुत नजदीक से देखा था। मनुष्य का वास्तविक और व्यावहारिक जीवन आज इतना व्यस्त हो गया है कि उनकी किसी एक स्थान पर सीमित रखना संभव नहीं। जीवन की विविध समस्याएँ आदमी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए बाध्य करती हैं। प्रेमचंद ने यही दिखाने के लिए 'गबन' की रचना की है।

प्रेमचंद ने मध्यवर्गीय जीवन - प्रवृत्तियों को इस उपन्यास में दिखाकर उनकी विकृतियाँ भी दिखाना चाहा है। इसमें नारी की आभूषणप्रियता दिखाना उतना मुख्य नहीं है, जितना यह दिखाना

कि व्यर्थ का आडम्बर स्थिति को कहाँ पहुँचा देता है। यदि रमानाथ कलकत्ता नहीं जाता तो उसके अन्दर की सारी कमजोरियां उभर कर नहीं आती। वह जालपा के सामने कुछ साफ-साफ नहीं कहता है, इससे ऐसा लगता है कि मानो वह जालपा के सामने किसी तरह के भय से ग्रस्त हो जाता है, लेकिन बात ऐसी नहीं है। उसका चरित ही ऐसा है। अगर वह कलकत्ता नहीं जाता, तो वह इस प्रथम आक्षेप का शिकार होता। कलकत्ता में पुलिस वालों के सामने उसका जो व्यवहार होता है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि रमानाथ का सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही कमजोर है, दूसरी बात यह है कि अगर रमानाथ कलकत्ता नहीं जाता, तो जालपा महज आभूषण-कामी नारी बनकर रह जाती।

प्रेमचंद भारतीय महिलाओं के भीतर पनपती जागृति को दिखाना चाहते थे। जब रमानाथ भाग जाता है तब जालपा ने अपनी जिन चारित्रिक विशेषताओं से परिचय दिया है, उनसे उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण आयाम सामने आता है। वह अपनी कमजोरियों से परिचित हो जाती है। वह सारे श्रृंगारिक सामानों और ऐश्वर्य पूरक वस्तुओं- जिनके चलते रमानाथ को कर्ज-भार उठाना पड़ा गंगा में फेंक देती है। वह कलकत्ता आकर अपने सम्पूर्ण नारीत्व का परिचय देती है। वह रमानाथ को सही रास्ते पर लाने के लिए हर संभव सफल प्रयास करती है। इसी आदर्शोन्मुखता ने प्रेमचंद को दो कथानक की रचना करने के लिए बाध्य किया।

लेकिन रमानाथ, जालपा और रतन के द्वारा इस तरह जोड़ा गया कि इसकी शृंखलात्मकता बाधित नहीं होती है। नारी और पुरुष के जीवन के प्रति जो विविध रूप दृष्टि कोण यहाँ आया है, प्रथम भाग में तो मात्र उसकी भूमिका कहा जायेगा।

विदेशी सरकार से सौदा करने वाले नेताओं का पोल भी यहीं खोला गया है। देवीदीन के माध्यम से स्वदेशी आन्दोलन को उपस्थित किया गया है। अंग्रेजी सरकार की अमानुषिकता और दमनचक्र की पराकाष्ठा यही दिखाई पड़ती है। उत्तरार्द्ध में मध्यवर्गीय नारी के प्रति जो वितृष्णा दिखाई पड़ती है, वह प्रेमचंद का उद्देश्य नहीं है। उत्तरार्द्ध में उन्होंने जालपा के चरित्र का विकसित रूप दिखाया है। वह उनके उद्देश्य में शामिल है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज,
डुमराँव - बक्सर